उसने हमें पवित्रशास्त्र दिया: व्याख्या की नींव

अध्याय एक

बाइबल आधारित व्याख्याशास्त्र का परिचय

THIRD MILLENNIUM MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2013 के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन का कोई भी हिस्सा प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इन्टरनेशनल., पो. बॉक्स 300769, फर्न पार्क, फ्लोरिडा 32730-0769 से लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या छात्रवृत्ति के प्रयोजनों के लिए संक्षिप्त टिप्पणियों को छोड़कर किसी भी रूप में या लाभ प्राप्ति के लिए किसी भी तरह से पुन:उत्पादित नहीं किया जा सकता है।

यदि कहीं और नहीं बताया गया तो पवित्रशास्त्र की सभी टिप्पणियाँ हिन्दी की पवित्र बाइबिल से ली गई हैं। 1984 अंतर्राष्ट्रीय बाइबिल सोसायटी © सर्वाधिकार सुरक्षित। बाइबिल प्रकाशक की अनुमति के द्वारा प्रयुक्त किए गये हैं।

थर्ड मिलेनियम की मसीही सेवा के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम मसीही सेवकाई एक लाभनिरपेक्ष मसीही संस्था है जो कि **मुफ्त में**, **पूरी दुनिया के लिये**, **बाइबल पर आधारित शिक्षा** मुहैया कराने के लिये समर्पित है। उचित, बाइबल पर आधारित, मसीही अगुवों के प्रशिक्षण हेतु दुनिया भर में बढ़ती मांग के जवाब में, हम सेमीनरी पाठ्यक्रम को विकसित करते हैं एवं बाँटते हैं, यह मुख्यतः उन मसीही अगुवों के लिये होती है जिनके पास प्रशिक्षण साधनों तक पहुँच नहीं होती है। दान देने वालों के आधार पर, प्रयोग करने में आसानी, मल्टीमीडिया सेमीनरी पाठ्यक्रम का 5 भाषाओं (अंग्रेजी, स्पैनिश, रूसी, मनडारिन चीनी और अरबी) में विकास कर, थर्ड मिलेनियम ने कम खर्च पर दुनिया भर में मसीही पासबानों एवं अगुवों को प्रशिक्षण देने का तरीका विकसित किया है। सभी अध्याय हमारे द्वारा ही लिखित, रुप-रेखांकित एवं तैयार किये गये हैं, और शैली एवं गुणवत्ता में द हिस्ट्री चैनल © के समान हैं। सजीवता के प्रयोग एवं शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट चलचित्र उत्पादन के लिये थर्ड मिलेनियम 2 टैली पुरस्कार जीत चुका है, और हमारा पाठ्यक्रम 150 भी ज्यादा देशों में प्रयोग हो रहा है। हमारी सामग्री डी.वी.डी, छपाई, इंटरनेट, उपग्रह द्वारा टेलीविज़न प्रसारण, रेडियो, और टेलीविज़न प्रसार का रूप लेते हैं।

हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार से उसमें शामिल हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org. पर जाएँ।

विषय-वस्तु सूची

I. परिचय 1

II. शब्दावली 1

क. बाइबल आधारित व्याख्याशास्त्र 2

ख. व्याख्याशास्त्रीय प्रक्रियाऐं 3

1. तैयारी 3
2. जाँच-पड़ताल 4
3. उपयोग 4

III. विज्ञान अधारित व्याख्याशास्त्र 5

क. बाइबल निहित आधार 5

ख. उदाहरण 6

ग. प्राथमिकताएँ 8

1. तैयारी 8
2. जाँच-पड़ताल 9
3. उपयोग 9

IV. भक्ति अधारित व्याख्याशास्त्र 10

क. बाइबल निहित आधार 11

ख. उदाहरण 12

ग. प्राथमिकताएँ 14

1. तैयारी 15
2. जाँच-पड़ताल 16
3. उपयोग 17

V. सारांश 18

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

उसने हमें पवित्रशास्त्र दिया:
व्याख्या की नीव
अध्याय एक
बाइबल आधारित व्याख्याशास्त्र का परिचय

परिचय

हम सभी जानते हैं कि युवा बच्चे अक्सर यह सोचते हैं कि वे वास्तविकता की तुलना बहुत अधिक जानते हैं। वे अपनी माता को खाना बनाते हुए देखते हैं, उनकी थोड़ी बहुत सहायता करते हैं। और यह अनुमान लगाते हैं कि, वे स्वयं की शक्ति पर कार्य करने के लिए पर्याप्त मात्रा में जानते हैं। वे अपने पिता को कार्य करते हुए देखते हैं, वे उनकी तरह एक या दो बार करते हैं और वे यह सोचते हैं कि जो कुछ उनका पिता जानता है उतना ही वे जानते है। परन्तु जीवन में किसी एक समय पर, बच्चे अक्सर यह पता लगा लेते हैं कि जो उन्होंने कल्पना की थी उसकी तुलना में उन्हें बहुत अधिक सीखने की आवश्यकता है।

दुर्भाग्य से, वयस्क भी अक्सर ऐसी ही गल्ती कर जाते हैं, यहाँ तक जब बात बाइबल की व्याख्या करने जैसी महत्वपूर्ण हो। हममें से बहुतेरे नियमित बाइबल को पढ़ते हैं; हममें से कुछ ने तो ऐसा बहुत वर्षों से किया है। परिणामस्वरूप, हम अक्सर यह अनुमान लगाते हैं कि हम पवित्रशास्त्र की व्याख्या के बारे में पर्याप्त जानते हुए आगे बढ़ते है और ऐसा करते हैं। परन्तु बाइबल आधारित व्याख्या उन बातों में से एक है जो कि वास्तविकता की तुलना में आसान जान पड़ती है परन्तु होती नहीं। और हम सावधानी से अपनी बाइबल की व्याख्या करने के लिए जो कुछ आवश्यक है, के ऊपर अपने चिन्तन को प्रकट करने के लिए समय लेते हैं, हम अक्सर यह पाते हैं कि हमने जैसी कल्पना की उसकी तुलना में सीखने के लिए बहुत कुछ है।

यह *उसने हमें पवित्रशास्त्र दिया: व्याख्या की नीव* के ऊपर हमारी श्रृंखला का पहला अध्याय है। इस श्रृंखला में, हम बाइबल आधारित व्याख्या और जाँच-पड़ताल अर्थात् छानबीन या इनके तरीकों के ऊपर कई महत्वपूर्ण दृष्टिकोणों की जानकारी को प्राप्त करेंगे जो बाइबल के प्रति हमारी समझ की क्षमता का विकास करेंगे। हमने इस अध्याय का शीर्षक "बाइबल आधारित व्याख्याशास्त्र का परिचय" दिया है। यह अध्याय सही और विद्वानात्मक तरीके से बाइबल आधारित व्याख्या की एक मूल रूपरेखा अर्थात् ढाँचे का परिचय देगा।

बाइबल आधारित व्याख्या पर हमारे परिचय को हम तीन मुख्य भागों में विभाजित करेंगे। सबसे पहले, हम हमारे विषय का परिचय कुछ महत्वपूर्ण शब्दावली को देते हुए दिशा निर्धारण को प्राप्त करेंगे। दूसरा, हम व्याख्या के प्रति "वैज्ञानिक" दृष्टिकोणों की जानकारी प्राप्त करेंगे जो कि विद्वानात्मक तरीके से बाइबल आधारित व्याख्या की विशेषता को प्रस्तुत करती है। और तीसरा, हम पारम्परिक शैक्षणिक दृष्टिकोणों के साथ संयोजन करते हुए भक्ति आधारित व्याख्या के महत्व को देखेंगे। आइए कुछ महत्वपूर्ण शब्दावली के साथ आरम्भ करें।

शब्दावली

मुख्य शब्दावली की गलत समझ किसी भी चर्चा में भ्रम का एक बड़ा स्रोत हो सकती है। परिणामस्वरूप हम हमारे अध्ययन में कई शब्द-अर्थों का परिचय देंगे। सबसे पहले हम इस बात की ओर देखेंगे कि बाइबल आधारित व्याख्याशास्त्र या भाष्यतंत्र विज्ञान से हमारा क्या अर्थ है। और दूसरा, हम व्याख्याशास्त्र की तीन प्रक्रियाओं को देखेंगे। आइए, सबसे पहले हम बाइबल आधारित व्याख्याशास्त्र की अवधारण को देखें।

बाइबल आधारित व्याख्याशास्त्र

धर्मविज्ञान और बाइबल अध्ययन में "व्याख्याशास्त्र" एक सामान्य सा शब्द है परन्तु हम इसे अक्सर अपने प्रतिदिन के जीवन में प्रयोग नहीं करते हैं। हममें से कइयों ने यह ध्यान दिया होगा कि शब्द "व्याख्याशास्त्र" यूनानी शब्दावली से संचालित होता है, जिसमें "हरमेस" नाम सम्मिलित है जो कि पौराणिक कथाओं में देवताओं का

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

सन्देशवाहक है। शब्द स्वयं ही यूनानी शब्दों के ऐसे परिवार से आता है जो कि क्रिया *हरमेनिओ* से सम्बन्धित है, जिसका अर्थ "भाषान्तरण" अर्थात् अनुवाद या "व्याख्या" से है, परिणामस्वरूप, व्यापक रूप से कहना जब हम व्याख्याशास्त्र के बारे में संकेत करते हैं, तो हमारे ध्यान में किसी तरह के सन्देश या सम्प्रेषण का भाषान्तरण या व्याख्या होती है।

फ्रेडरिक शलाएरमाकर, जो 1768 से 1834 में रहे, को अक्सर आधुनिक व्याख्याशास्त्र का जनक कहा जाता है। 1819 में उसने "सामान्य व्याख्याशास्त्र" की आवश्यकता के बारे में कहा जो कि सभी तरह के साहित्य को समझने के लिए एक एकीकृत सिद्धान्त था। उन्होंने यह स्वीकार किया कि हमें विभिन्न विषयों को उनके अपने विशेष व्याख्याशास्त्र के दृष्टिकोण से देखना चाहिए, परन्तु उन्होंने साथ ही यह तर्क दिया कि सभी तरह के व्याख्याशास्त्र को व्याख्या के एक सामान्य तरीके को साझा करना चाहिए।

बीसवीं सदी के अन्त में, प्रमुख विद्वानों ने सामान्य व्याख्याशास्त्र की आवश्यकता के होने का अनुभव किया क्योंकि व्याख्या की प्रक्रिया अध्ययन के कई विभिन्न क्षेत्रों में एक महत्वपूर्ण पहलू बन गई थी। आज के समय में व्याख्याशास्त्र दर्शनशास्त्र, साहित्य और कला की चर्चाओं में प्रकट होता है। व्याख्याशास्त्र मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, और यहाँ तक कि भौतिकी और जीव विज्ञान जैसे क्षेत्रों में बहुत ज्यादा उपयोगी है। यह विस्तार इसलिए प्रगट हुआ है क्योंकि कई प्रमुख विद्वान जो इन क्षेत्रों में कार्यरत हैं, इस बात के प्रति ज्यादा जागरूक हो गए हैं कि जिन विषयों का वे अध्ययन करते हैं, वह अपने में कितना ज्यादा अर्थ की व्याख्या करता है।

जैसा कि इस अध्याय का शीर्षक हमें सुझाव देता है कि, हम मौलिक तौर पर बाइबल आधारित व्याख्याशास्त्र में रूचि रखते हैं, जो कि पविशास्त्र के महत्व और अर्थ की व्याख्या करने का अध्ययन है। यदि आप कभी पवित्रशास्त्र को पढ़ें, तो आप स्वयं को कम से कम अनौपचारिक तौर पर बाइबल आधारित व्याख्याशास्त्र में सम्मिलित होता हुआ पाएंगे। बाइबल के प्रति अनौपचारिक दृष्टिकोण बहुत ही ज्यादा महत्व रखता है, और यह अध्याय ज्यादात्तर उन बातों के ऊपर निर्मित होगा जिन्हें हम पहले ही से जानते हैं। परन्तु इसी के साथ हम अनौपचारिक व्याख्याशास्त्र से आगे की ओर भी जाएंगे और उन मुद्दों की खोज करेंगे जो बाइबल की व्याख्या में शैक्षणिक, विद्वानात्मक व्याख्या की अग्रभूमि की ओर चलते हैं।

> **सामान्य व्याख्याशास्त्र और बाइबल सम्बन्धी व्याख्याशास्त्र के बीच में भिन्नता और तुलना करना एक उपयोगी बात है। सामान्य व्याख्याशास्त्र की बहुत सी बातें बाइबल के व्याख्याशास्त्र में साधारण तौर पर पाई जाती हैं जैसे कि यह विचार करना की, क्रिया का क्या कार्य है, भाषण के क्या हिस्से हैं, व्याकरण, वाक्यविन्यास क्या है, और ऐसी ही अन्य बातें? कैसे हम यह निर्धारित करते हैं कि जिन शब्दों को एक लेखक या लेखिका ने लिखा है उसमें उसका क्या अर्थ निहित है? परन्तु सैद्धान्तिक अनुकूलता के कारण बाइबल सम्बन्धी व्याख्याशास्त्र के लिए विशेष नियम है क्योंकि बाइबल यह दावा करती है कि वह परमेश्वर का वचन है, और परिणामस्वरूप, यह अधिकारिक है, और यह हमें परमेश्वर को प्रकाशित करती है। और क्योंकि परमेश्वर एक है और परमेश्वर सत्य है, परिणामस्वरूप यह स्वयं में कभी भी विरोधाभास प्रगट नहीं करती है। और इसलिए, बाइबल सम्बन्धी व्याख्याशास्त्र का एक पहलू इतना ज्यादा विशिष्ठ है कि हम पवित्रशास्त्र के सारे विवरण को इस पूर्वधारणा के साथ आपस में सम्बन्धित करने की कोशिश करते हैं कि वे कभी भी एक दूसरे का विरोध नहीं करते हैं, परन्तु इसकी बजाए वे बोलते हैं, परमेश्वर के प्रकाशन में विभिन्नता होते हुए भी वे स्वयं में आपसी सहमति के साथ ही बोलते हैं।**
>
> **-रेव्ह. माईक ग्लोडो**

इस बात को ध्यान में रखते हुए कि बाइबल सम्बन्धी व्याख्याशास्त्र से हमारा क्या अर्थ है, हमें दूसरी महत्वपूर्ण शब्दावली की ओर मुड़ना चाहिए, जो कि व्याख्याशास्त्रीय प्रक्रियाऐं है – यह वह मुख्य क्रियाविधि है जिसका हम तब अनुसरण करते हैं जब हम बाइबल की व्याख्या करते हैं।

व्याख्याशास्त्रीय प्रक्रियाऐं

इस पूरी श्रृंखला में, हम तीन मुख्य व्याख्याशास्त्रीय प्रक्रियाओं के बारे में बात करेंगे: तैयारी, जाँच-पड़ताल, और उपयोग। ये प्रक्रियायें बाइबल की व्याख्या करने के लिए इतनी महत्वपूर्ण हैं कि इस श्रृंखला का प्रत्येक अध्याय इन तीन श्रेणियों में से किसी न किसी एक में आता है। आइए सबसे पहले तैयारी को देखें।

तैयारी

तैयारी में व्याख्याशास्त्रीय प्रक्रियाऐं उस समय प्रयोग में आती है जब हम पवित्रशास्त्र के किसी एक हिस्से की व्याख्या करना आरम्भ करते हैं। और इसमें कोई सन्देह नहीं है कि, इसका अर्थ यह हुआ कि हम बारम्बार तैयारी करते हैं, क्योंकि हम बाइबल को बार बार पढ़ते और तैयार करते हैं। एक बहुत ही ज्यादा महत्वपूर्ण भाव में, तैयारी अपरिहार्य है क्योंकि कोई भी बाइबल के पास *तबुला रासा*– अर्थात् एक खाली श्यामपट्ट के समान नहीं आता है। हम पवित्रशास्त्र के पास अवधारणाओं, व्यवहारों और भावनाओं के एक मसूह से प्रभावित दृष्टिकोण से आते हैं। भले ही हम इसका अहसास करें या ना करें, प्रत्येक बार जब हम बाइबल को पढ़ते हैं, तो बहुत सारे प्रभावों ने पहले ही हमें पवित्रशास्त्र के साथ अच्छी तरह से निपटारा करने के लिए तैयार कर दिया होता है, परन्तु अन्य प्रभावों ने बाइबल की सही व्याख्या के लिए रूकावटों को उत्पन्न किया हुआ होता है। इसी कारण से, ये अध्याय भी हमें स्वयं को तैयार करने के लिए हमारे ध्यान को जानबूझकर अपनी ओर खींचते हैं, जब हम बाइबल की व्याख्या करते हैं।

> **मैं सोचता हूँ कि हम स्वयं को तैयार करने के लिए बहुत से कार्यों को करते हैं, या हमें स्वयं को तैयार करने, पवित्रशास्त्र का अध्ययन करने के लिए बहुत से कार्यों को करना चाहिए...पवित्रशास्त्र का अध्ययन करना कठिन हो सकता है। यहाँ पर ऐसे विवरण हैं जिनकी हमें जाँच करने की आवश्यकता है, और यहाँ पर बहुत से, बहुत से ऐसे विवरण हैं जिन्हें हमें स्मरण रखना चाहिए जब हम पवित्रशास्त्र का अध्ययन कर रहे होते हैं, साथ ही परमेश्वर के आत्मा को सुन रहे होते हैं। इसलिए हमें अच्छे औजार बन जाने के लिए तैयार होने की आवश्यकता है। हमें अन्यों के द्वारा लिखी हुई अच्छी सामग्री के द्वारा तैयार होने की आवश्यकता है। हमें पवित्रआत्मा से प्रार्थना करते हुए और उसे हममें कार्य करने देने के द्वारा तैयार होने की आवश्यकता है, जिससे कि वह हमारे जीवनों में स्वतंत्रता के साथ कार्य कर सके...आप परमेश्वर की आवाज को सुनने जा रहे हैं, और परमेश्वर की आवाज को स्वयं के जीवन, और फिर उस आवाज को अन्यों तक भी पहुँचाने के लिए सुनने वाले हैं।**
>
> **- डा. स्टीफन जे. ब्रामेर**

तैयारी के लिए व्याख्याशास्त्रीय प्रक्रियाओं के साथ ही, हम जाँच-पड़ताल की प्रक्रिया का भी पता लगाएंगे जब हम जाँच-पड़ताल के बारे में बोलते हैं तो हमारा ध्यान बाइबल के हिस्से के मौलिक अर्थ के ऊपर होता है।

जाँच-पड़ताल

आवश्यक रूप से, जब हम पवित्रशास्त्र की जाँच-पड़ताल करते हैं, तो हम हमारे पीछे अपने आधुनिक संसार को छोड़ देते हैं और बाइबल के हिस्सों के अर्थ को समझते हैं जब वे जैसे पहले लिखे गए थे। जाँच-पड़ताल की प्रक्रियाओं में, हम हमारे ध्यान को परमेश्वर और बाइबल के मानवीय लेखकों के द्वारा, बाइबल के स्वयं दस्तावेजों में इच्छित वास्तविक अर्थ पर, और पवित्रशास्त्र के पहले श्रोताओं पर केन्द्रित करते हैं। कई तरीकों से, जब हम पवित्रशास्त्र को पढ़ते हैं, तो हम कुछ सीमा तक, इसके वास्तविक अर्थ का निपटारा करने से बच नहीं सकते हैं।

उदाहरण के लिए, यदि हम बाइबल को इसकी वास्तविक मूल भाषा में पढ़ें, तो हमें पुरातन इब्रानी, अरामी और यूनानी लेखों की भाषाई परम्परा को ध्यान में रखना होगा। परन्तु तौभी यदि हम बाइबल के आधुनिक अनुवाद पर भरोसा करते हैं, जो अनुवाद पुरातन शब्दावली और व्याकरण की अभिव्यक्तियों के आंकलन पर आधारित है। इन तरीकों और अन्य कई तरीकों से, बाइबल के संदर्भ का मूल अर्थ सदैव इसकी व्याख्या के लिए महत्वपूर्ण होता है। परिणामस्वरुप, हमें जाँच-पड़ताल की प्रक्रिया में बहुत ज्यादा ध्यान देकर इसका निपटारा करना चाहिए।

व्याख्याशास्त्रीय प्रक्रियाऐं न केवल तैयारी और जाँच-पड़ताल को स्वयं में सम्मिलित करती है, परन्तु इसमें उपयोग की प्रक्रिया का होना भी आवश्यक है।

उपयोग

सरल शब्दों में, उपयोग का अर्थ सही रूप से मूल अर्थ को समकालीन श्रोताओं के साथ जोड़ने से है। जब एक बार हम मूल अर्थ को समझ जाते हैं, तो हम मानो अतीत की सदियों, जैसी वह थी, में से होते हुए हमारी आधुनिक परिस्थितियों में, यात्रा करते हैं। जीवन में उपयोग करने के लिए, हम उन तरीकों पर चिन्तन करते हैं जिनके द्वारा पवित्रशास्त्र को परमेश्वर के लोगों के ऊपर लागू किया जाना चाहिए।

जैसा कि अन्य व्याख्याशास्त्रीय प्रक्रियाओं के साथ में है, जीवन में उपयोग की जाने वाली बातों को पूरी तरह अनदेखा करना असम्भव है। यहाँ तक कि जब हम केवल मात्र बाइबल के किसी एक संदर्भ की सतही समझ को प्राप्त करते हैं, तौभी हम इसको अपनी सोच पर, कुछ सीमा तक लागू करते हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि, पवित्रशास्त्र हमें बाइबल को समझने के पाखण्ड, और इसकी अनाज्ञाकारिता के बारे में चेतावनी देता है। परिणामस्वरूप, इस श्रृंखला में हम अपने ज्यादात्तर ध्यान को पवित्रशास्त्र के जीवन में जानबूझकर और पूरी तरह से अच्छे तौर पर उपयोग करने के बारे में केन्द्रित करेंगे।

जब हम इन अध्यायों का अध्ययन करते हैं, तो हम देखेंगे कि तैयारी, जाँच-पड़ताल और उपयोग अत्यधिक अन्तरनिर्भर प्रक्रियाएँ हैं। हम केवल तभी एक प्रक्रिया में अच्छी तरह से कार्य कर सकते हैं जब हम अन्यों में भी अच्छी तरह से कर रहे हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि, प्रत्येक की विभिन्न योग्यतायें और क्षमतायें हैं, और जिसके परिणामस्वरूप हमारा झुकाव इन प्रक्रियाओं में से एक या दूसरे पर जोर देने से होता है। परन्तु तैयारी, जाँच-पड़ताल और उपयोग की अन्तरनिर्भरता हमें इन तीनों क्षेत्रों में अपने कौशल का विकास करने के लिए स्मरण दिलाती है।

अब क्योंकि हमने बाइबल आधारित व्याख्याशास्त्र के परिचय में कुछ महत्वपूर्ण शब्दावलियों को देख लिया है, हमें हमारे दूसरे मुख्य विषय की ओर मुड़ना चाहिए: जो कि विज्ञान आधारित व्याख्याशास्त्र है – अर्थात् कैसे बाइबल के विद्वानों ने सदियों से पवित्रशास्त्र की व्याख्या ज्यादा से ज्यादा एक वैज्ञानिक अभ्यास के दृष्टिकोण के रूप में की है।

विज्ञान आधारित व्याख्याशास्त्र

ज्यादा या कम मात्रा में, बाइबल आधारित व्याख्याशास्त्र में सदैव ही कुछ वैज्ञानिक स्वाद रहा है, और इस प्रवृत्ति ने सदियों में विकास किया है, वैसे ही जैसे अध्ययन की अन्य शाखाओं ने किया। इन विकासों के पीछे कारण बिल्कुल स्पष्ट है। बाइबल उन लोगों के द्वारा लिखी गई थी जो कि हजारों साल पहले रहते थे। इसलिए, कई तरह से, हम सही तौर पर पवित्रशास्त्र के साथ पुरातन संसार में लिखे हुए अन्य लेखों जैसा व्यवहार करते हैं। जैसा कि विद्वानों ने बाइबल के साथ उसके ऐतिहासिक संदर्भ को दृष्टिकोण में ध्यान रखते हुए व्यवहार किया है, उन्होंने अक्सर अध्ययन की वैज्ञानिक शाखाओं जैसे पुरातत्वविज्ञान, इतिहास, नृविज्ञान, समाजशास्त्र और भाषा विज्ञान से बहुत कुछ प्राप्त किया है। जैसा कि इन और अन्य वैज्ञानिक प्रयासों के रूप में, पवित्रशास्त्र की शैक्षणिक व्याख्या ने बाइबल के तथ्यात्मक, या तर्कसंगत, वैज्ञानिक तरीकों का उपयोग किया है।

इसका अर्थ क्या है उसे देखने के लिए, हम विज्ञान आधारित व्याख्याशास्त्र से सम्बन्धित तीन विषयों को स्पर्श करेंगे। पहला, हम इसके बाइबल आधारित आधार पर ध्यान देते हुए इस दृष्टिकोण की वैधता की ओर संकेत करेंगे। दूसरा, हम कुछ ऐसे ऐतिहासिक उदाहरणों का उल्लेख करेंगे जो इस तरह के व्याख्याशास्त्र के विकास को दर्शाते हैं। और तीसरा, हम यह देखेंगे कि कैसे पवित्रशास्त्र के प्रति यह दृष्टिकोण व्याख्या की प्रक्रियाओं की निश्चित प्राथमिकताओं को स्थापित करता है। आइए सबसे पहले हम वैज्ञानिक व्याख्याशास्त्र के बाइबल निहित आधारों की ओर मुड़ें।

बाइबल निहित आधार

बाइबल के समय के घटनाक्रम में रहते हुए लोग आधुनिक वैज्ञानिक नहीं थे। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि वे बुद्धिहीन और तर्कहीन थे। इसके विपरीत, उनकी परिष्कृत वास्तु कलाओं की उपलब्धियाँ, व्यापक समुद्री यात्रा, नवीन कृषि कार्यक्रम, और कई अन्य अनगिनित सांस्कृतिक उपलब्धियाँ यह प्रदर्शित करते हैं कि बाइबल के दिनों में रहने वाले लोगों ने संसार के बारे में पूरी तरह तर्कसंगत तरीकों और तथ्यों के साथ सोचा, बिल्कुल वैसे ही जैसे आधुनिक वैज्ञानिक सोचते हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

इसी कारण, हमें आश्चर्यचकित नहीं होना चाहिए कि बाइबल के लेखकों ने अक्सर स्वयं ही पवित्रशास्त्र की व्याख्या तथ्यात्मक और तार्किक विश्लेषण के दृष्टिकोण से किया। समय की कमी के कारण, आइए जो कुछ हमने कहा उसका क्या अर्थ होता है, को मात्र एक संदर्भ से देखें। रोमियों 4:3-5 में प्रेरित पौलुस ने लिखा है कि:

> **पवित्र शास्त्र क्या कहता है? "यह कि अब्राहम ने परमेश्वर पर विश्वास किया, और यह उसके लिये धार्मिकता गिना गया।" काम करनेवाले की मजदूरी देना दान नहीं, परन्तु हक्क समझा जाता है। परन्तु जो काम नहीं करता वरन् भक्तिहीन के धर्मी ठहरानेवाले पर विश्वास करता है, उसका विश्वास उसके लिये धार्मिकता गिना जाता है (रोमियों 4:3-5)।**

इन वचनों में, पौलुस ने उत्पत्ति 15:6 से टिप्पणी की है, जहाँ पर परमेश्वर ने अब्राहम के विश्वास को उसके लिए धार्मिकता "गिना" जब उसने परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर विश्वास किया। परन्तु ध्यान दीजिए कि कैसे विधिपूर्वक पौलुस पुराने नियम के संदर्भ से व्यवहार करता है। आयत 4 और 5 में, पौलुस सावधानी से शब्द "गिना" या "माना" जैसे शब्दों का यूनानी शब्द *लोगीज़ोमाई* का अनुवाद किया जा सकता है, के अर्थ का विश्लेषण करता है। यूनानी के अपने ज्ञान से, उसने तर्क दिया कि, "मजदूरी देना... दान नहीं, परन्तु हक्क समझा जाता है।" परन्तु फिर वह यह टिप्पणी करता है कि प्रत्येक जो परमेश्वर में "विश्वास" करता है – न कि कामों में – यह उसके लिए धार्मिकता गिना जाता है।" इसलिए वह इस तर्क के ऊपर आधारित हो कर यह निष्कर्ष निकालता है कि उत्पत्ति 15:6 यह इंगित करता है कि अब्राहम को विश्वास के द्वारा धार्मिकता एक मुफ्त वरदान के रूप में प्रदान की गई थी। यह देखना यहाँ कठिन नहीं है कि प्रेरित पौलुस ने उत्पत्ति 15 को सावधानी से तथ्यात्मक और तार्किक विश्लेषण के साथ संभाला है।

जैसा कि यह उदाहरण प्रदर्शित करता है, समय समय पर और बारी बारी से बाइबल के लेखकों ने सावधनी से पवित्रशास्त्र की इस तरह की व्याख्या को प्रस्तुत किया है। और पवित्रशास्त्र के प्रति उनका दृष्टिकोण यह संकेत देता है कि विज्ञान आधारित बाइबल का व्याख्याशास्त्र दृढ़ता से स्वयं पवित्रशास्त्र में ही निहित है।

विज्ञान आधारित व्याख्याशास्त्र के बाइबल निहित आधार को ध्यान में रखते हुए, आइए हम संक्षेप में बाइबल की इस तरह की व्याख्या के कुछ ऐतिहासिक उदाहरणों को देखें।

उदाहरण

कलीसियाई धर्माचार्य काल के मध्य, बाइबल व्याख्या के लिए सबसे प्रभावशाली लोगों में एलेक्जेंड्रिया का ओरेगन था जो कि ई. सन्.,185 से 254 में रहा। जैसा कि हम इसे इस अध्याय में बाद में देखेंगे, ओरेगन विज्ञान आधारित व्याख्या से भी बहुत आगे चला गया, परन्तु इस पर भी उसने अपने समय को बाइबल की व्याख्या के लिए सावधानी से इसके तथ्यात्मक और तर्कसंगत विश्लेषण के लिए समर्पित किया। उदाहरण के लिए, ओरेगन की एक सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक *हेक्सपला* के निर्माण में थी, जो कि 6000 पृष्ठों से मिलकर बना हुआ 50 से ज्यादा पुस्तकों की श्रृंखला का एक साहित्य है, जिसमें ओरेगन ने पुराने नियम के विभिन्न इब्रानी और यूनानी अनुवादों की आपस में शब्द-दर-शब्द तुलना की है। यद्यपि यह साहित्य उत्तरोतर सदियों में खो गया, परन्तु यह फिर भी आरम्भिक कलीसियाई इतिहास में विज्ञान आधारित व्याख्या के एक उल्लेखनीय उदाहरण का प्रतिनिधित्व करता है।

बाइबल सम्बन्धी विज्ञान आधारित व्याख्याशास्त्र के दृष्टिकोणों के विकसित होने के अन्य प्रमुख उदाहरण भी ओरेगन के दिनो में ही प्रगट होते हैं। उदाहरण के लिए, हिप्पो का अगस्टीन, जो ई. सन्., 354 से 430 के बीच में रहा, ने लगातार बाइबल का सावधानी से निरन्तर परन्तु अक्सर श्रमसाध्य, तथ्यात्मक और तर्कसंगत विश्लेषण पर ध्यान केंद्रित किया। और थॉमस एक्विनास, जो कि लगभग 1225 से लेकर 1274 में रहा, के समय में, पाश्चात्य मसीहियत में बाइबल के व्याख्या की मुख्यधारा में अरस्तू के तर्कसंगत, वैज्ञानिक दर्शनशास्त्र का प्रभाव प्रतिबिम्बित हुआ। एक्विनास और उनके अनुयायियों ने बाइबल के लिए कठोर अनुभवजन्य और तार्किक विश्लेषण को लागू किया।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

दुर्भाग्य से, इस समय तक कलीसियाई इतिहास में साक्षरता दर अत्यन्त कम थी, और बाइबल और अन्य पुस्तकें व्यापक रूप से उपलब्ध नहीं थी। इसलिए, केवल कुछ ही सौभाग्यशाली लोग वास्तव में पवित्रशास्त्र का अध्ययन कर सकते थे। परिणामस्वरूप, कलीसियाई अधिकारियों ने इस बात को नियंत्रित किया कि कैसे सामान्य जनता बाइबल को समझ रही है। परन्तु इस संदर्भ में, कई विद्वानों ने पवित्रशास्त्र की व्याख्या कलीसिया के प्रभुत्व से हट कर और भी अधिक परिष्कृत वैज्ञानिक विश्लेषण के माध्यम से की।

इस दिशा में एक आरम्भिक कदम तेरहवीं से लेकर सोलहवीं सदी के प्रारम्भिक समय पुनर्जागरण के मध्य लिया गया। 1204 में, कांस्टेंन्टिनोपल को चौथे क्रूसयुद्ध में अपने अधीन कर लेने के बाद, वहाँ पर जमा किए हुए बाइबल की बहुत सारी शास्त्रीय और पाण्डुलिपियों को पश्चिम में लाया गया। परन्तु कलीसियाई धर्मसिद्धान्तों के दृष्टिकोण से व्याख्या करने के महत्व की बजाए, नवजागरणकाल के विद्वानों ने इनकी व्याकरण और इनके प्राचीन ऐतिहासिक संदर्भों का विश्लेषण करके इन पुरातन लेखों को समझने के लिए स्वयं को समर्पित कर दिया। गुटेनबर्ग के द्वारा चलित छपाई टंकण मशीन के आविष्कार के साथ ही, जो कि लगभग 1450 में प्रयोग होने लगी, पुनर्जागरण अनुसन्धान को व्यापक रूप से उपलब्ध होने में ज्यादा देर नहीं लगी। परिणामस्वरूप, प्रभावशाली लोग जैसे इरास्मुस, जो कि 1466 से 1536 में रहा, ने अपने दिनों में बहुत सारे लोगों के लिए बाइबल की व्याख्या के बढ़ते हुए वैज्ञानिक दृष्टिकोण की ओर नेतृत्व किया।

सोलहवीं सदी में प्रोटेस्टेन्ट धर्मसुधारवादी बाइबल आधारित वैज्ञानिक व्याख्याशास्त्र को और भी आगे ले गए। पुनर्जागरण के मार्ग का अनुसरण करते हुए, मार्टिन लूथर, उलरिच ज्विंग्ली और जॉन केल्विन जैसे आरम्भिक प्रोटेस्टेन्ट नेताओं ने बाइबल की व्याख्या कलीसिया की हठधर्मिता के प्रभुत्व को जोरदार तरीके से अस्वीकार कर के की। इसकी बजाय, उन्होंने यह जोर दिया कि पवित्रशास्त्र का अर्थ इसकी व्याकरण और इसके ऐतिहासिक संदर्भों के विश्लेषण के माध्यम से निर्धारित किया जाना चाहिए।

यह बात ध्यान में रखनी अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि आरम्भिक प्रोटेस्टेन्टवादीयों ने अपने इस जोर को सुप्रसिद्ध धर्मसिद्धान्त *सोला सिकरिपचरा*, अर्थात् "केवल पवित्रशास्त्र ही" में जोड़ा। प्रोटेस्टेन्टवादियों ने समझा कि बाइबल ही मात्र निर्विवाद अधिकार है, वही केवल सर्वोच्च अधिकार था जिसके द्वारा बाकी सभों को आंका जा सकता था। बाइबल के अधिकार के वर्चस्व के प्रति इस प्रतिबद्धता का अर्थ यह था कि पवित्रशास्त्र की केवलमात्र अचूक व्याख्या स्वयं पवित्रशास्त्र है। परिणामस्वरूप, आरम्भिक प्रोटेस्टेन्टवादियों के लिए बाइबल को अतिसावधानी से उसकी व्याकरण को उसके प्राचीन ऐतिहासिक संदर्भ में तर्कसंगत विश्लेषण के माध्यम से समझने के अलावा कुछ भी ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं था।

पश्चिम यूरोप में सत्रहवीं और अठारहवीं सदियों में ज्ञानोदय के समयकाल में बाइबल आधारित वैज्ञानिक व्याख्याशास्त्र आधुनिक, तथ्यात्मक और तर्कसंगत वैज्ञानिक मानकों के द्वारा सभी तरह के सत्यों के दावों को आंकने के बाद और भी आगे की ओर बढ़ी, जिसमें पवित्रशास्त्र भी सम्मिलित है। भूवैज्ञानिकों, पुरातत्वविदों, और अन्य आधुनिक वैज्ञानिकों की तरह ही, बाइबल के विद्वानों ने सावधानी से पवित्रशास्त्र के अध्ययन के लिए वैज्ञानिक मानकों को लागू किया।

बाइबल के प्रति ये दृष्टिकोण कई तरीकों से कई सदियों में विकसित हुआ है। परन्तु कम या ज्यादा, आधुनिक बाइबल के विद्वान दो मुख्य पथों का पालन करते हैं। एक तरफ तो, प्रमुख शैक्षणिक संस्थानों में बहुसँख्यक व्याख्याकारों ने एक ऐसी दिशा का अनुसरण किया है जिसे अक्सर आलोचनात्मक बाइबल अध्ययन कहा जाता है। व्यापक तौर पर कहना, गंभीर बाइबल अध्ययन करने वाले विद्वान जिन्होंने *सोला सिकरिपचरा* के पारम्परिक प्रोटेस्टेन्ट धर्मसिद्धान्त को अस्वीकार कर दिया है और सत्य को समझने के लिए तर्क और वैज्ञानिक विश्लेषण के सर्वोच्च मानक पर ध्यान दिया है। कुल मिलाकर, आलोचनीय व्याख्याकारों ने यह निष्कर्ष निकाला है कि पवित्रशास्त्र परमेश्वर, मानवता और इस संसार के बारे में पुरातन, आदिकालीन, और अविश्वनीय विचारों का प्रतिनिधित्व करता है। इस दृष्टिकोण में, आधुनिक लोग कुछ सीमा तक ही पवित्रशास्त्र से लाभ प्राप्त कर सकते हैं, परन्तु पवित्रशास्त्र के प्रति किसी भी तरह का निर्णय बाइबल की शिक्षाओं की बजाए वैज्ञानिक जाँच-पड़ताल पर निर्भर होना चाहिए।

दूसरी तरफ, अन्य विशेषज्ञों ने उस पथ का अनुसरण किया है जिसे हम आधुनिक इवैन्जेलिकल अर्थात् सुसमाचारवादी बाइबल अध्ययन कह सकते हैं। इवैन्जेलिकल विद्वान यह पुष्टि करते हैं कि बाइबल ही जीवन और

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

विश्वास के लिए एकमात्र निर्विवाद नियम है। वे पवित्रशास्त्र के तथ्यात्मक और तर्कसंगत वैज्ञानिक प्रतिबिम्ब को अस्वीकार नहीं करते हैं, वे पूरी तरह से बाइबल के वैज्ञानिक विश्लेषण के कठोर उपयोग के लिए अपना समर्थन देते हैं। इस पर भी, जब इस तरह के विश्लेषण स्पष्ट तौर पर पवित्रशास्त्र की शिक्षाओं के विरोधी होते हैं, तो इवैन्जेलिकल विद्वान पूरे हृदय से स्वयं पर पवित्रशास्त्र को अपने ऊपर अधिकार मानते हुए इसके अधीन हो जाते हैं। जैसा कि हम इन अध्यायों में देखेंगे, यह श्रृंखला इवैन्जेलिकल विश्वास का अनुसरण करती है।

> **यह एक विश्वासी के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण विषय है, विशेषकर, प्रोटेस्टेन्ट विश्वासियों के लिए, कि वे पवित्रशास्त्र के अधिकार के प्रति अधीन हो जाएँ... सच्चे अधिकार में सहमति को प्राप्त करने के लिए अधिकार और शक्ति होती है, और पवित्रशास्त्र विशेष तौर पर विश्वासियों के जीवन में अधिकारी के रूप में कार्य करने के लिए योग्यता रखता है। इसका एक कारण यह है कि पवित्रशास्त्र में ज्ञान और अन्तर्दृष्टि है जो कि अन्यथा हमारे लिए प्राप्त नहीं की जा सकती थी। अन्य कारण यह है कि जबकि कई दूसरे स्थानों में सच्चाई है, परन्तु जो सच्चाई पवित्रशास्त्र में सन्निहित है वह इसकी संरचना और अन्तिम रूप में अलौकिक तरीके से अन्तर्निहित है जिसके कारण इसमें अचूकता और विश्वासयोग्यता की एक सीमा है जो कि इस संसार में हमें प्राप्त होने वाली सच्चाई के सभी स्रोतों में सब के बीच में अद्वितीय है। अब क्योंकि हम जानते हैं कि यह क्यों प्राप्त की जा सकती है जो कि विशेष तौर पर विश्वसनीय है, जो कि अचूक है, जो कि विफल होने में अक्षम है, यह इसलिए है क्योंकि यह परमेश्वर-प्रेरित है...यह परमेश्वर का वचन है, ताकि जब हम पवित्रशास्त्र के अधिकार के बारे में बोलें तो हम वास्तव में परमेश्वर के अधिकार के बारे में बोल रहे होते हैं। और इसलिए इसके प्रति अधीन होने का अर्थ है कि यह स्वीकार करना कि हम उसकी सृष्टि हैं, हम व्युत्पन्न और आश्रित प्राणी हैं। और यहाँ पर ये विरोधाभास है: अधीनता का यह कार्य हममें होने के बजाए जो कि हमें नीचा दिखाता या कम शक्तिशाली बनाता है, ऐसा कहना सही है कि, यह वास्तव में बहुत ही ज्यादा सशक्त करने की बात है, जिसे संभवतया हम कर करते हैं, क्योंकि यह सच्चाई की दिशा को निर्धारित करती है, हमें जीवन के पथ पर दृढ़ता से बने रहने और समृद्ध करने के लिए डाल देती है।**
>
> **- डा. ग्लीन सक्रोजी**

वैज्ञानिक व्याख्याशास्त्र के बाइबल निहित आधारों का उल्लेख कर लेने के बाद और कुछ ऐतिहासिक उदाहरणों को देख लेने के बाद, हमें अब अपने तीसरे विषय की ओर मुड़ना चाहिए: जो कि पवित्रशास्त्र के प्रति इस दृष्टिकोण की प्राथमिकताओं से सम्बन्धित है।

प्राथमिकताएँ

सामान्य तौर पर, संसार में चारों तरफ रहने वाले आधुनिक इवैन्जेलिकल बाइबल विद्वान वैज्ञानिक व्याख्याशास्त्र के प्रति पूरी शक्ति से समर्पित हैं। इस प्रतिबद्धता ने तैयारी, जाँच-पड़ताल और उपयोग की प्रक्रियाओं की कुछ निश्चित प्राथमिकताओं के लिए प्रेरित किया है। आइए उनकी तैयारी की विशिष्ठ प्राथमिकताओं के साथ आरम्भ करते हुए यह देखें कि कैसे यह सत्य है।

तैयारी

जैसा कि हमने पहले ही कहा है कि, तैयारी जब भी हम पवित्रशास्त्र का व्याख्या करते हैं, के लिए एक अपरिहार्य कार्य है। परन्तु शैक्षणिक बाइबल व्याख्याकारों ने तैयारी के लिए प्राथमिकताओं को विकसित किया है जो कि शिक्षण की कई अन्य शाखाओं में बौद्धिक प्राथमिकताओं के साथ ज्यादा या कम पाई जाती हैं।

कल्पना कीजिए कि आप विश्वविद्यालय में जीव विज्ञान का अध्ययन आरम्भ करने वाले हैं और आप अच्छी तरह से स्वयं को तैयार करना चाहते हैं। इसलिए आप जीव विज्ञान के कई व्याख्याताओं को इसके बारे में पूछते हैं, " मैं अपने अध्ययन के लिए कैसे तैयारी कर सकता हूँ?" हो सकता है कि वे आपको ऐसी बातें कहते होंगे: "जितना ज्यादा हो सके जैविक तथ्यों को स्मरण कर लीजिए।" और जितना ज्यादा हो सके उन सभी जैविक प्रक्रियाओं को सीखें जिन्हें हम जीव विज्ञान में प्रयोग करते हैं।"

ठीक है, कुछ इसी तरह से, यदि आप अधिकांश इवैन्जेलिकल धर्मविज्ञान की संस्थानों के ज्यादात्तर व्याख्याताओं से आज के समय में पूछेंगे कि कैसे वे उनके विद्यालय में अध्ययन करने के लिए बाइबल के अध्ययन की

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

तैयारी करें, तो उनमें से ज्यादात्तर कुछ ऐसा ही मिलता जुलता परामर्श देंगे। हो सकता है कि वे ऐसा कहें कि, "इब्रानी या यूनानी भाषा को सीखें।" "बाइबल के बारे में जितना ज्यादा तथ्यों को वे जान सकते हैं उन्हें सीखें।" व्याख्याशास्त्र के सही तरीकों को सीखें।" कुल मिलाकर, ज्यादात्तर विद्वान आज अपने व्यवसाय में बाइबल के लिए वैज्ञानिक और तर्कसंगत दृष्टिकोण के ऊपर जोर देते हैं। और वे यह विश्वास करते हैं कि उनके छात्रों की सफलता जैसा वे कर रहे हैं वैसा ही करने में निर्भर करती है।

इसमें कोई सन्देह नहीं है कि, स्वयं की तैयारी तथ्यात्मक और क्रमबद्ध तरीके से करना अति महत्वपूर्ण है। बाइबल के बारे में तथ्यों को सीखने के लिए कोई और विकल्प नहीं है। और हमें बाइबल आधारित व्याख्या के लिए आवश्यक सिद्धान्तों को जानने के लिए अपनी पूरी कोशिश करनी चाहिए। परन्तु हम कुछ ही पलों में देखेंगे कि, मात्र बौद्धिक तैयारी पर विशेष रूप से ध्यान केन्द्रित करने से हम उन कुछ महत्वपूर्ण तरीकों को अनदेखा कर सकते हैं जिनके लिए हमें चाहिए कि हम इनका उपयोग करके बाइबल के व्याख्या के लिए स्वयं को तैयार करें।

तैयारी की कुछ प्राथमिकताओं को देखने के बाद, आइए हम अब विज्ञान आधारित व्याख्याशास्त्र में जाँच-पड़ताल की प्राथमिकताओं को देखें।

जाँच-पड़ताल

सामान्य अर्थ में, बाइबल के व्याख्याकार पवित्रशास्त्र की जाँच-पड़ताल को दो तरीकों से विभाजित करते हैं: श्रुतिभाव्य अर्थ निरूपण अर्थात् टीकाकरण करना और स्वैर भाष्य अर्थात् व्यक्तिगत् अर्थ निरूपण। श्रुतिभाव्य अर्थ निरूपण यूनानी शब्दावली से आता है जिसका अर्थ होता है कि "किसी चीज से बाहर निकाला हुआ" या "कहीं से व्युत्पन्न हुआ" अर्थात् किसी लेख में अर्थ को निकाला हुआ या वहाँ से कोई अर्थ निकाला हुआ। इसके विपरीत, स्वैर भाष्य में "किसी में जाने की" या "किसी में डाल दिए जाने" के अर्थ का संकेत मिलता है। इसका अर्थ है कि संदर्भ में से अर्थ को पढ़ना। वैज्ञानिक-उन्मुख बाइबल आधारित व्याख्याकार स्वैर भाष्य अर्थ निरूपण से बचने के लिए बहुत ज्यादा कोशिश करते हैं। वे व्याख्या के उन सिद्धान्तों को प्रयोग करते हैं जिनमें वे विश्वास करते हैं कि ये पवित्रशास्त्र के प्रति स्वैर भाष्य अर्थात् व्यक्तिगत् अर्थ निरूपण की बजाए श्रुतिभाव्य अर्थ निरूपण की समझ को सुनिश्चित करेंगे।

इस दृष्टिकोण में तब, जाँच-पड़ताल में बड़ी मात्रा में हमारे स्वयं की बौद्धिक तैयारी को डालना पड़ता है ताकि पवित्रशास्त्र के तथ्यों की खोज की जा सके। हम बाइबल के लेखों के वास्तविक अर्थ की जाँच-पड़ताल अति सावधानी के साथ बड़े परिश्रम के साथ कल्पित तरीकों या व्याख्या के सिद्धान्तों के द्वारा इसके मूल अर्थ को समझने के लिए प्रयोग करते हैं – न कि किसी के विचारों को।

जैसा कि हम इस पूरी श्रृंखला में देखेंगे, कि वैज्ञानिक तरीकों को बाइबल की व्याख्या में इस तरह से लागू करना अत्यन्त महत्वपूर्ण पहलू है। परन्तु हम यह भी देखेंगे कि पवित्रशास्त्र से आवश्यक मूल अर्थ को प्राप्त करने के लिए सही जाँच-पड़ताल सभी बातों को स्वयं में सम्मिलित नहीं करता है।

हमने विद्वानात्मक तरीके से, विज्ञान आधारित व्याख्याशास्त्र की तैयारी और जाँच-पड़ताल की प्रक्रियाओं में कुछ निश्चित प्राथमिकताओं को देख लिया है। अब हम उपयोग की प्रक्रिया के बारे में जानने के लिए तैयार हैं। कैसे बहुसँख्यक इवैन्जेलिकल विद्वान इसे आज बाइबल पर लागू करते हैं।

उपयोग

जब मैं धर्मविज्ञान का एक विद्यार्थी था, तो मेरे साथ अध्ययन करने वाला एक सहविद्यार्थी अक्सर व्याख्याताओं को उस समय बाधित करता था जब वे व्याख्यान दे रहे होते थे। उसके प्रश्न सदैव एक जैसे ही होते थे। "श्रीमान् जी, आपका यह श्रुतिभाव्य अर्थ निरूपण अर्थात् टीकाकरण करना हमारे लिए आज क्या अर्थ रखते हैं?" "जो कुछ आप बाइबल के इस संदर्भ के बारे में कह रहे हैं उसे मैं कैसे अपने जीवन में लागू करूँ?" किसी अति विरल अपवाद के साथ, प्रतिक्रिया सदैव एक जैसी ही होती थी। व्याख्याता मुस्कुराता था और कहता था कि, "ये एक अच्छा प्रश्न है। पर इसे मुझ से नहीं, वरन् व्यावहारिक धर्मविज्ञान के व्याख्याता से पूछें।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

जैसा कि यह अनुभव प्रगट करता है कि, अक्सर ऐसा होता है कि, बाइबल का वैज्ञानिक, विद्वानात्मक व्याख्या का पवित्रशास्त्र के व्यावहारिक उपयोग में बहुत कम स्थान है। अपने अच्छे रूप में, यह तथ्यात्मक-उन्मुख आधुनिक उपयोग की ओर नेतृत्व करती है। दूसरे शब्दों में, ऐसे तथ्यों को स्थापित करना कि बाइबल मसीह के आधुनिक अनुयायियों को विश्वास करने के बारे में सिखाती है। हम विश्वासियों को विश्वास करने के लिए बुलाते हैं कि बाइबल के धर्मवैज्ञानिक और तथ्यात्मक दावे सच्चे हैं। यह सुनिश्चित करने के लिए, इस तरह के उपयोग का बहुत अधिक मूल्य है। परन्तु यह उन कई महत्वपूर्ण तरीकों को भी अनदेखा कर देता है जिनमें पवित्रशास्त्र को आज हमें हमारे जीवनों में लागू करना चाहिए।

बाइबल अध्ययन के तरीके महत्वपूर्ण हैं, परन्तु हम इनके ऊपर कई बार ज्यादा जोर दे देते हैं क्योंकि हम इन्हें बहुत ज्यादा यांत्रिक भी बना सकते हैं, मानों कि यह स्वचलित हों, जिससे यह मात्र एक विषय बन कर रह जाते हैं जैसे कि, "ठीक है, मैंने इन तरीकों को प्रयोग किया है; यहाँ पर मेरा तार्किक निष्कर्ष यह है कि," यह एक विशुद्ध बौद्धिक अभ्यास बन कर रह जाता है इसकी बजाए कि इसमें पूरा व्यक्ति सम्मिलित होता और इससे कुछ प्राप्त करता। मैंने कई सालों के बाद यह पाया है कि...उदाहरण के लिए, एक स्थान जहाँ पर मैंने अपने अनुसन्धान में बहुत ज्यादा जोर दिया है वह सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, संसार और पुरातन संसार रहा है, क्योंकि यह आवश्यकता थी। बहुत सारे लोग यहाँ तक नहीं पहुँच सकते हैं, परन्तु एक विद्वान होने के नाते मैं उस उपयोग को बाहर ला सकता हूँ जिसे उपयोग किया जा सकता है। और मैंने यह पाया है, मैंने प्रयोग भी किया है, जैसा कि बाइबल के लेखों में से निकल कर आता है, इसने मेरी समझ के लिए उन लेखों में से पूरे नए संसारों को खोल कर रख दिया। उसी समय, स्वयं पृष्ठभूमि में कोई आत्मिक जीवन नहीं था। मैंने बौद्धिक आनन्द को इसमें से प्राप्त किया, परन्तु मूल आत्मिक जीवन बाइबल के इन लेखों में था, और इसकी ओर आने के बाद, और इसमें से सुनना कि वास्तव में परमेश्वर हमें क्या कह रहा था, अपने जीवनों को इसके प्रति समर्पित करने से, ये ऐसा कुछ है जो कि कोई यांत्रिक प्रक्रिया नहीं हो सकती है। यह ऐसा कुछ है जो कि अपने हृदयों को उसके प्रति समर्पित करने से ही आता है जिसने हमसे प्रेम किया और स्वयं को हमारे लिए दे दिया।

- डा. क्रेग एस. किन्नर

अब क्योंकि हमने बाइबल व्याख्याशास्त्र में उपयोग होने वाली कुछ महत्वपूर्ण शब्दावली, और वैज्ञानिक व्याख्याशास्त्र की लम्बी परम्परा को देख लिया है, हमें अब इस अध्याय के अपने तीसरे मुख्य शीर्षक की ओर मुड़ना चाहिए, कि कैसे विज्ञान आधारित व्याख्याशास्त्र को भक्ति आधारित व्याख्याशास्त्र के साथ जुड़ा हुआ होना चाहिए, जो कि ऐसी मसीही विश्वासी परम्परा है कि जब हम पवित्रशास्त्र का व्याख्या करते हैं तो उस समय हमें परमेश्वर के निकट आने की हमारी आवश्यकता पर जोर देती है।

भक्ति आधारित व्याख्याशास्त्र

मसीह के अनुयायियों ने विज्ञान आधारित व्याख्याशास्त्र को अपनाया है जो कि सामान्य व्याख्याशास्त्र के बहुत से पहलुओं के सदृश है क्योंकि मानवीय लेखकों ने पवित्रशास्त्र को लिखा। परन्तु भक्ति आधारित व्याख्याशास्त्र मौलिक रूप से पवित्रशास्त्र के दिव्य लेखक के होने के ऊपर केन्द्रित है।

विश्वासियों ने सदैव यह स्वीकार किया है कि पवित्रशास्त्र के मानवीय वचन भी परमेश्वर के ही वचन हैं। जैसा कि 2 तीमुथियुस 3:16 में हमें कहा गया है कि, पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया, या ज्यादा शाब्दिक रूप में कहना, "परमेश्वर के मुँह-से बोला गया।" ये तथ्य बाइबल के व्याख्याशास्त्र को सामान्य व्याख्याशास्त्र के अन्य पहलूओं से भिन्न करता है क्योंकि हमें पवित्रशास्त्र को भक्ति आधारित व्याख्याशास्त्र से व्याख्या करना चाहिए, जैसा कि यह स्वयं परमेश्वर का जीवित वचन है।

जब हम पवित्रशास्त्र की व्याख्या करते हैं तो यह अति महत्वपूर्ण होता है कि हम यह स्मरण रखें कि हम न केवल मानवीय लेखकों के वचनों को ही उपयोग कर रहे हैं, बरन् परमेश्वर के पवित्र आत्मा के भी, जो कि त्रिएकत्व का तीसरा व्यक्ति है, जिसने मानवीय लेखकों के विशिष्ट व्यक्तित्व, शैली, अनुभव के माध्यम से इन शब्दों में अपनी सांस को डाला है। जब हम पवित्रशास्त्र के पास जाते हैं, तो इसका अर्थ यह है कि क्योंकि वह आत्मा जिसने इसके शब्दों में अपने सांस को डाल कर इन्हें बोला है वह भी इसमें विद्यमान है

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

और वह हम विश्वासियों में कार्य करता है, इन भावों में हम पवित्रशास्त्र के लेखक तक पहुँच सकते हैं। और हमें इसकी बहुत ज्यादा आवश्यकता है; हमें इसकी उस समय आवश्यकता होती है जब हम पवित्रशास्त्र के पास प्रार्थना के साथ, आत्मा पर निर्भर होते हुए आते हैं कि वह हमारे मनों को खोले और साथ ही वह पवित्रशास्त्र को हमारे मनों में खोले।

- डा. डेनिस ई. जॉनसन

जो कुछ हमने कहा उसका अर्थ देखने के लिए, हम भक्ति आधारित व्याख्याशास्त्र को इस तरीके से देखेंगे जो कि हमारे पहले की चर्चा के सामान्तर होगा। सबसे पहले, हम यह देखेंगे कि इस तरह से पवित्रशास्त्र की व्याख्या करने के लिए बाइबल निहित आधार हैं। दूसरा, हम उन कुछ बाइबल के विद्वानों के ऐतिहासिक उदाहरणों को चित्रित करेंगे जो भक्ति आधारित व्याख्याशास्त्र को व्यवहार में लाए। और तीसरा, हम यह देखेंगे कि कैसे पवित्रशास्त्र के इस दृष्टिकोण का अनुसरण करने के द्वारा व्याख्या की हमारी प्रक्रियाओं की प्राथमिकतायें आकार लेती हैं। आइए सबसे पहले भक्ति आधारित व्याख्याशास्त्र के बाइबल निहित आधार की ओर मुड़ें।

बाइबल निहित आधार

यद्यपि बाइबल के लेखक अक्सर पवित्रशास्त्र की जाँच ज्यादा या कम वैज्ञानिक तरीकों से करते हैं, परन्तु यह भी देखना अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि उन्होंने पवित्रशास्त्र को भक्तिमय रूप से देखने के लिए भी सम्पर्क किया है। समय समय पर, उन्होंने संकेत दिया है कि मसीह के अनुयायी होने के नाते हमें पवित्रशास्त्र को परमेश्वर के वचन के रूप में, परमेश्वर की उपस्थिति में, इस तरह से पढ़ना चाहिए कि यह कुछ असाधारण को हमारे लिए लाए, यहाँ तक कि परमेश्वर से अलौकिक अनुभव को हमारे लिए ले आए।

बाइबल के लेखकों ने व्याख्याशास्त्र के इस आयाम का कई तरीकों से संकेत दिया है परन्तु अभी हम उदाहरण के लिए केवल एक ही संदर्भ का उल्लेख करेंगे। इब्रानियों 4:12 में हम ऐसे पढ़ते हैं:

क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित, और प्रबल, और हर एक दोधारी तलवार से भी बहुत चोखा है, और जीव, और आत्मा को, और गाँठ गाँठ, और गूदे गूदे को अलग करके, वार पार छेदता है; और मन की भावनाओं और विचारों को जाँचता है (इब्रानियों 4:12)।

इस संदर्भ में, इब्रानियों का लेखक भजन संहिता 95 के एक हिस्से की ओर संकेत करता है जो कि उसने पहले के वचनों में प्रयोग किया है, जिसे वह "परमेश्वर का वचन" कह कर पुकारता है। इससे पहले इब्रानियों 4:7 में, वह इसी भजन को उद्धृत करते हुए कहता है कि परमेश्वर ने स्वयं "दाऊद के द्वारा बोला।" और इससे भी पहले, इब्रानियों 3:7 में, उसने भजन संहिता 95 को इन शब्दों को साथ परिचित किया है "जैसा की पवित्र आत्मा कहता है।"

अब, ध्यान दीजिए कि कैसे भजन संहिता के दिव्य लेखक होने को स्वीकार कर लेने के बाद, इब्रानियों का लेखक पवित्रशास्त्र को पढ़ने के अपने अनुभव का विवरण देता है। वह कहता है कि पवित्रशास्त्र स्वयं में "जीवित और क्रियाशील" है। यह हमारे अस्तित्व के अन्तर को "छेदता" और "मन की भावनाओं और विचारों" को ऐसी फलक से जाँचता है जो कि किसी भी दोधारी तलवार से ज्यादा तीखी है। विज्ञान आधारित व्याख्याशास्त्र में हमने बाइबल को एक वस्तु के रूप में देखा जहाँ हम इसे काटते और विश्लेषण करते हैं। परन्तु इस संदर्भ में, इब्रानियों का लेखक यह संकेत देता है कि पवित्रशास्त्र वास्तव में हमें काटता और विश्लेषित करता है।

यह संदर्भ हमारी चर्चा के लिए विशेष तौर पर हमारे लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि इब्रानियों का लेखक एक बहुत ही ज्यादा जटिल बाइबल विद्वान था। समय समय पर, उसने पुराने नियम के पवित्रशास्त्र को इतनी ज्यादा अन्तर्दृष्टीय गहराई से सम्पर्क किया है कि वह नए नियम के अन्य लेखकों से आगे चला गया है। परन्तु फिर भी, उसका पवित्रशास्त्र के प्रति उच्च बौद्धिक विश्लेषण उसे भक्ति आधारित व्याख्याशास्त्र से अलग नहीं करता है। इसके विपरित, उसकी बौद्धिक व्याख्या पवित्रशास्त्र के प्रति उसके दृष्टिकोण की योग्यता को उन्नत इस तरीके से करती है जो कि उसे परमेश्वर के साथ उच्च भावपूर्ण, सम्मोहक और गहरी परिवर्तनकारी मुठभेड़ों में ले आता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

और वैसे भी, वह हमें यह दिखाता है कि विज्ञान आधारित और भक्ति अधारित व्याख्याशास्त्र आपस में मिलकर एक साथ कार्य करते हैं।

भक्ति आधारित व्याख्याशास्त्र के बाइबल निहित आधारों को देख लेने के बाद, हम अब कुछ ऐतिहासिक उदाहरणों का उल्लेख इस तरह से करेंगे जिसमें मसीह के अनुयायियों ने विज्ञान आधारित और भक्ति आधारित दृष्टिकोणों को व्याख्या के लिए आपस में जोड़ दिया है।

उदाहरण

बाइबल का भक्ति आधारित व्याख्याशास्त्र कलीसिया के इतिहास के धर्माचार्य काल में बहुत ज्यादा विशेष रूप से महत्वपूर्ण था। हमने पहले एलेक्जेंड्रिया के ओरेगन के बारे में उल्लेख किया जो कि बाइबल का सतर्क, विज्ञान आधारित विद्वान था। तौभी, ओरेगन को सुनिए जो नियोकैसरिया के ग्रेगरी को *ओरेगन के ग्रेगरी को लिखे हुए पत्र* में कैसे उत्साहित करता है:

> **जब तुम दिव्य पठन् के लिए स्वयं को समर्पित करते हो, तो खराई और परमेश्वर के साथ विश्वास में दृढ़ता से टिके हुए, दिव्य शब्दों के अर्थों की खोज करना जो कि ज्यादातर लोगों से छिपे होते हैं। खटखटाने और खोजने से नहीं रूकना, क्योंकि दिव्य वचनों को समझने के लिए सबसे महत्वपूर्ण तत्व प्रार्थना करना है।**

यहाँ ओरेगन ग्रेगरी से कहा है कि वह "दिव्य पठन् के लिए [स्वयं] को समर्पित" करे। "दिव्य पठन्" शब्दावली बाद में लेटिन वाक्य *लेक्टियो डिवाइना* के भाव में व्यक्त, भक्ति आधारित व्याख्याशास्त्र की एक परम्परा है जो कि निरन्तर आज भी कई भिन्न रूप में विद्यमान है।

अब, ओरेगन का पवित्रशास्त्र के प्रति दृष्टिकोण बहुत ज्यादा गहराई से नए-अफलातूनवाद या अरस्तूवाद से प्रभावित था, विशेषकर जैसा कि यह पहले के यहूदी पुराने नियम के व्याख्याकार एलेक्जेंड्रिया के फिलो के लेखन कार्य में व्यक्त किया गया है। इस दृष्टिकोण से देखने से, बाइबल की सतह के नीचे स्वर्ग था, आत्मिक सच्चाइयाँ थीं जो कि "ज्यादातर लोगों से छिपी" हुई थी। विश्वासियों के पास ऐसे विश्वास की आवश्कयता थी जो कि "परमेश्वर में दृढ़ता से टिका हुआ हो" यदि वह बाइबल के छिपे हुए सत्यों की खोज करना चाहते हों। कहने का अर्थ यह है कि, "दिव्य वचनों [अर्थात् बाइबल] के अर्थ को समझना।" इसलिए, बाइबल के व्याख्याकारों को चाहिए कि वे परमेश्वर से व्यक्तिगत् प्रकाशन को पाने के लिए "खटखटाने और खोजने से न रूकें।" सच्चाई तो यह है कि, ओरेगन के अनुसार, पवित्रशास्त्र के "दिव्य शब्दों के अर्थों को समझने" के लिए सबसे "महत्वपूर्ण तत्व प्रार्थना करना" है। यद्यपि हमें ओरेगन के नए-अफलातूनवादी उन्मुखीकरण को इन विषयों की ओर अस्वीकार कर देना चाहिए, तौभी वह ऐसा कुछ स्वीकार करता है जो कि निश्चित ही पवित्रशास्त्र के प्रति सत्य है। जब विश्वासी परमेश्वर की खोज प्रार्थना के साथ चिन्तन करते हुए करते हैं जब वे पवित्रशास्त्र का अध्ययन करते हैं, तब परमेश्वर उन्हें आत्मज्ञान प्रदान करता है जो कि अन्यथा गुप्त में ही रह जाता हैं।

> **ओरेगन जैसे लोग इस तथ्य के ऊपर जोर देते हैं कि जब आप बाइबल को पढ़ते हैं, तो यह वास्तव में महत्वपूर्ण होता है कि आप इसके लेख में से आत्मिक अर्थ को प्राप्त करें। अब मैं यह कहना चाहता हूँ कि यह एक वास्तव में स्वास्थ्यकारी बात है, क्योंकि बाइबल मात्र कोई ऐतिहासिक पुस्तक नहीं है, न ही यह कोई शैक्षणिक पुस्तक है जो कि हमारी धर्मवैज्ञानिक कल्पना को गुदगुदी दे। इसका आत्मिक महत्व है... सच्चाई तो यह है कि, हम यह विश्वास करते हैं कि दोनों एक दूसरे से सम्बन्धित हैं, यह कि जब हम बाइबल के वचनों के अर्थ के प्रति हमारी योग्यता को विकसित करते हैं, वह पृष्ठभूमि जिसमें से ये संदर्भ आते हैं, ऐतिहासिक विवरण आदि, जो कि हमारी सहायता करते हैं कि हम इस आत्मिक आत्मबोध को प्राप्त करें कि लेख का क्या अर्थ है, दोनों के लिए अर्थात् सबसे पहले लेख के पहले पाठकों के लिए, और परिणामस्वरूप हमारे लिए भी।**
>
> **- डा. शिमौन विबर्ट**

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

पूरे मध्यकालीन युग के मध्य में, पवित्रशास्त्र के लगभग सभी प्रसिद्ध व्याख्याकार किसी न किसी रूप में दिव्य पठन् या *लेक्टियो डिवाइना* को व्यवहार में लाए, जिसमें ऑगस्टीन और एक्विनॉस जैसे महत्वपूर्ण विज्ञान आधारित व्याख्याकार भी सम्मिलित हैं।

सामान्य तौर पर, *लेक्टियो डिवाइना* को चार जाने-पहचाने कदमों या आंदोलनों में व्यवहार में लाया गया: *लेक्टियो*, अर्थात् पवित्रशास्त्र का पठन; *मेडीटियो* अर्थात् जो कुछ पढ़ा गया उसकी विषय-वस्तु के ऊपर शान्त मनन; *औरटियो* परमेश्वर से गंभीर प्रार्थना कि वह आत्मबोध को प्रदान करे; और *कन्टम्पलेटिओ*, अर्थात् शान्त हो कर परमेश्वर के आत्मा की लिए ठहरना कि वह किसी एक संदर्भ की विशेषता के बारे में उच्च सहज, गहन भावनात्मक और परिवर्तित करने वाली कायलता के भाव को प्रदान करे।

धर्मसुधारकाल के समय में रोम की कलीसिया *लेक्टियो डिवाइना* को सभी तरह की झूठी शिक्षाओं को सही बनाने के लिए व्यवहार में लाया करती थी। कलीसिया के अधिकारियों ने यह दावा किया कि उनकी शिक्षायें परमेश्वर की ओर से अलौकिक आत्मबोध से व्युत्पन्न हुई हैं, परन्तु ये "आत्मबोध" वास्तव में कुछ महत्वपूर्ण तरीकों से पवित्रशास्त्र की शिक्षाओं के विरोध में थे। इसकी प्रतिक्रिया में, ज्यादात्तर प्रोटेस्टेन्ट विद्वानों ने विज्ञान आधारित व्याख्याशास्त्र को सही तरीके से उचित मात्रा में प्रयोग किया। परन्तु वे बाइबल के भक्तिमयी तरीके के पठन को नहीं भूले। इसके विपरीत, उन्होंने यह बल दिया कि भक्ति आधारित व्याख्याशास्त्र पवित्रशास्त्र के सही श्रुतिभाव्य अर्थ निरूपण अर्थात् टीका के साथ बन्धा हुआ है।

बाइबल का ये प्रोटेस्टेन्ट विद्वानात्मक गुण व्यापक तौर पर स्वीकार नहीं किया गया है, इसलिए केवल दो जाने-पहचाने उदाहरणों का उल्लेख करना सहायतापूर्ण होगा: जॉन केल्विन और जोनाथन एडवर्ड।

जॉन केल्विन को ठीक ही आरम्भिक सुधारवाद के समय में बाइबल का सबसे ज्यादा तर्कसंगत और तार्किक व्याख्याकार कह कर पुकारा जाता है। अधिवक्ता और मानवतावादी पुनर्जागरण के रूप में उसके प्रशिक्षण ने उसे उचित तौर पर इस भूमिका को पूरा करने के लिए सुसज्जित किया है। परन्तु उसकी सभी टीकाओं में, हम यह पाते हैं कि वह न केवल बड़े श्रमसाध्य से विज्ञान आधारित वरन् भक्ति आधारित व्याख्याशास्त्र की विधियों को अपनाता है।

मात्र एक उदाहरण के तौर पर, *हाग्गै के ऊपर उसकी टीका* के भाग 2 में, उसने ऐसे लिखा है:

> **परमेश्वर की महिमा उसके वचन के ऊपर इतनी ज्यादा चमकती है कि, हमें इससे इतना ज्यादा प्रभावित होना चाहिए... कि मानो हम उसके बिल्कुल निकट हों, जैसे कि उसके आमने सामने।**

पवित्रशास्त्र के व्याख्या को उससे अलग, अव्यक्तिक वैज्ञानिक क्रिया के रूप में व्यवहार न करने के द्वारा, केल्विन यह जोर देता है कि "परमेश्वर की महिमा उसके वचन के ऊपर इतनी ज्यादा चमकती हैं" कि जब हम पवित्रशास्त्र को पढ़ते हैं तो "हमें इससे इतना ज्यादा प्रभावित होना चाहिए" कि मानो स्वयं परमेश्वर हमारे साथ "आमने सामने" है। जैसा कि यह संदर्भ इंगित करता है कि, केल्विन ने अपने अनुयायियों को पवित्रशास्त्र को परमेश्वर के भस्म, तीव्र भावनात्मक और नम्र कर देने वाली उपस्थिति का अनुभव प्राप्त करने के लिए बुलाया।

बहुत कुछ इसी तरह से, अमेरीका के आरम्भिक धर्मविज्ञानी जोनाथन एडवर्ड, जो कि 1703 से लेकर 1758 तक रहा, ने निरन्तर बाइबल के प्रति अपने कुशल तर्कसंगत और तार्किक विश्लेषण का प्रदर्शन किया। परन्तु उसके निबन्ध *व्यक्तिगत् कहानियों* में से इन शब्दों को सुने:

> **जब मैंने [1 तीमुथियुस] में से वचनों को पढ़ा, तो मेरे प्राण में...दिव्य परमेश्वर के लिए महिमा के भाव उत्पन्न हुए; एक नई भावना आई, इससे पहले मैंने जैसा भी अनुभव किया था वह उससे बिल्कुल भिन्न था। पवित्रशास्त्र के वचन मेरे लिए कभी भी ऐसे सजीव नहीं हुए थे जैसे कि यह थे। मैंने स्वयं में सोचा, वह ईश्वर कितना अधिक उत्कृष्ट था, और मुझे कितना अधिक प्रसन्न होना चाहिए, यदि मैं उस परमेश्वर का सदैव...अनन्तकाल के लिए आनन्द ले सकता!**

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

यहाँ पर हम देखते हैं कि एडवर्ड "दिव्य परमेश्वर के लिए महिमा के उत्पन्न हुए भाव" से प्रसन्न हो जाते हैं। और परमेश्वर की आत्मा का यह अनुभव इतना ज्यादा शक्तिशाली है कि एडवर्ड यह इच्छा करते हैं कि वे उसका "सदैव...अनन्तकाल के लिए आनन्द ले सकते!" एडवर्ड ज्ञानोदय के तर्कवाद से सबसे ज्यादा प्रभावित प्रसिद्ध व्यक्ति है, और उसका विश्वास उचित था कि बाइबल व्याख्या को गहन तरीके से वैज्ञानिक रूप में होना चाहिए। परन्तु यहाँ तक कि एडवर्ड बाइबल के केवल तर्कवादी चिन्तन से सन्तुष्ट नहीं था। वह जानता था कि पवित्रशास्त्र को गहरे सहज ज्ञान से युक्त भावना के साथ भी पढ़ा जाना चाहिए।

हमारे दिनों में, व्याख्याशास्त्र का भक्ति आधारित दृष्टिकोण बाइबल के विद्वानात्मक व्याख्या से लगभग लुप्तप्राय सा हो गया है। जबकि आरम्भिक प्रोटेस्टेन्टवादी रोमन कैथोलिक व्याख्याकारों की यांत्रिक प्रतिक्रिया के विरूद्ध विज्ञान आधारित व्याख्याशास्त्र की ओर मुड़े, आज के बहुतेरे बाइबल के विद्वान भक्ति आधारित व्याख्याशास्त्र को अपने बौद्धिक पराक्रम के नीचे रखते हैं। वे अपनी सारी विद्वता का ध्यान सतर्क, तर्कसंगत श्रुतिभाव्य अर्थ निरूपण अर्थात् टीकाकरण करने के लिए दे देते हैं, जैसे कि मानो यह दृष्टिकोण उन्हें वह सब उपलब्ध कराएगा जिसकी हमें बाइबल से आवश्यकता है। परमेश्वर से प्रकाश को पाने के लिए तीव्र प्रार्थना, उपवास और चिन्तन की आवश्यकता होती है जो कि सारे के सारे इवैन्जेलिकल विद्वता से लुप्त हो गए हैं। परन्तु यह महत्वपूर्ण है कि हम दोनों अर्थात् विज्ञान आधारित और भक्ति आधारित व्याख्याशास्त्र का अनुसरण करें जब हम औपचारिक, शैक्षणिक व्याख्या को करते हैं। हमें सावधान रहने की आवश्यकता है कि हम किसी भी चरम की छोर तक न जाए, परन्तु बहुतेरे प्रोटेस्टेन्ट व्याख्याकारों ने अतीत में यह कार्य किया है, और हमें उनके नमूने के पीछे चलने के लिए बुद्धिमान होने की आवश्यकता है।

भक्ति आधारित व्याख्याशास्त्र के बाइबल निहित आधारों को, और धर्मविज्ञानिकों के कुछ ऐतिहासिक उदाहरणों को ध्यान में रखते हुए जिन्होंने बाइबल की व्याख्या के विज्ञान आधारित और भक्ति आधारित दृष्टिकोणों को आपस में संयुक्त किया है, आइए हम संक्षेप में इस तरह के व्याख्याशास्त्र की प्राथमिकताओं को देखें।

प्राथमिकताएँ

मसीह के ज्यादात्तर अनुयायी पवित्रशास्त्र का अध्ययन एक भक्तिमयी आत्मा से आरम्भ करते हुए करते हैं। परन्तु जब वे बाइबल के विद्वतापूर्ण व्याख्या में ज्यादा निपुण हो जाते हैं, तो वे अक्सर भक्ति आधारित व्याख्याशास्त्र की महत्वपूर्णता की दृष्टि को खो देते हैं। परन्तु बाइबल का विज्ञान आधारित व्याख्याशास्त्र अक्सर इतना ज्यादा उच्च श्रेणी का बौद्धिक और विश्लेषणात्मक होता है कि हम वास्तव में ऐसा कुछ भूल जाते हैं जो कि मसीह के साथ हमारे जीवन – अर्थात् उसके वचन के द्वारा परमेश्वर के व्यक्तिगत् और शक्तिशाली परिवर्तित करने वाले अनुभव के लिए बहुत ज्यादा महत्वपूर्ण होता है। इसी कारण से, हमें यह देखना चाहिए कि कैसे पवित्रशास्त्र के प्रति एक भक्ति आधारित दृष्टिकोण हमारी प्राथमिकताओं को समायोजित करता है, जो कि हमारे पास है, जब हम इन तीनों व्याख्याशास्त्र की प्रक्रियाओं का अनुसरण करते हैं।

हम भक्ति आधारित व्याख्याशास्त्र की प्राथमिकताओं की जाँच भी उसी तरह से करेंगे जैसे हमने विज्ञान आधारित प्राथमिकताओं की जाँच को किया। सबसे पहले, हम तैयारी के लिए प्राथमिकताओं को निर्धारित करेंगे। इसके बाद, हम भक्ति आधारित व्याख्याशास्त्र में जाँच-पड़ताल की प्रक्रिया पर ध्यान केन्द्रित करेंगे। और अन्त में, हम इस तरह की व्याख्या के प्रति कुछ विचार इसके आधुनिक उपयोग के ऊपर देंगे। आइए तैयारी की प्राथमिकताओं के साथ आरम्भ करें।

तैयारी

दुर्भाग्य से, मसीह के बहुतेरे गंभीर अनुयायी यह विश्वास करते हैं कि जब हम पवित्रशास्त्र को पढ़ते हैं तो हमारा परमेश्वर की विशेष उपस्थिति के अनुभव के ऊपर बिल्कुल भी नियंत्रण नहीं होता है। यह या तो घटित होता है या फिर नहीं होता है। और इसका कोई और विकल्प नहीं है कि हम स्वयं को इसके लिए तैयार करें। परन्तु सुनिए याकूब ने जिस तरह से इस भ्रान्त धारणा को याकूब 4:8 में सम्बोधित किया है:

परमेश्वर के निकट आओ, तो वह भी तुम्हारे निकट आएगा (याकूब 4:8 पु.हि.अनु)

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

ये भाव "परमेश्वर के निकट आओ" पुराने नियम से आते हैं। विश्वासयोग्य आराधक परमेश्वर के पास मिलाप वाले तम्बू और मन्दिर में परमेश्वर की विशेष उपस्थिति में उसके "निकट आने" से करते थे। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि परमेश्वर हर कहीं उपस्थिति है और वह स्वयं की पहिचान नाटकीय तरीके से किसी भी समय जैसा वह इच्छा करता है वैसे कर सकता है। परन्तु याकूब के वचन मानवीय दायित्व के ऊपर बाइबल के जोर को प्रतिबिम्बित करते हैं। यदि हम परमेश्वर की विशेष उपस्थिति का अनुभव करना चाहते हैं, तो हमें उसके निकट आने की आवश्यकता है। और परमेश्वर हमारे निकट आने के द्वारा अपनी उपस्थिति का आदान प्रदान करेगा।

सामान्य शब्दों में, भक्ति आधारित व्याख्याशास्त्र में पवित्रीकरण या परमेश्वर के लिए पवित्र अभिषेक सम्मिलित होता है। जैसा कि पवित्रशास्त्र यह शिक्षा देता है कि, हमें स्वयं को प्रत्येक उस कार्य से अलग करना चाहिए जो कि हमें परमेश्वर के साथ ऐक्य करने के मार्ग पर रूकावट उत्पन्न करता है और प्रत्येक उस कार्य को करना चाहिए जो कि ऐसा करने में हमें आगे बढ़ाता है। कहने की आवश्यकता नहीं है, कि इस तरह की तैयारी में कई तरह की चीजें सम्मिलित है जिनका उल्लेख करना यहाँ संभव नहीं है, परन्तु तीन सामान्य श्रेणियों को बताने के द्वारा जो कि हमें उनके विस्तार के भाव को प्राप्त करने में सहायता करती है: ये वैचारिक, व्यावहारिक और भावनात्मक तैयारियाँ हैं।

सबसे पहले, हमें पवित्रशास्त्र के द्वारा वैचारिक तैयारी के लिए परमेश्वर की उपस्थिति के लिए तैयार होना चाहिए। ऐसा कहने से हमारा अर्थ यह है कि हमें परमेश्वर के सच्चे वचन के प्रति अपने विश्वास की पुष्टि करने के लिए हमारे सबसे उत्तम कार्य को करना चाहिए। परमेश्वर, मानव जाति, और संसार के बारे में गलत विचारधारणा परमेश्वर के साथ हमारे ऐक्य में रूकावट को खड़ा करते हैं। जैसा कि हमने देखा है, कि बाइबल के विद्वानों में अपेक्षाकृत अवधारणाओं के संकीर्ण समूह पर ध्यान केन्द्रित करने की प्रवृत्ति होती है जो कि उनकी शैक्षणिक महत्वों पर सही बैठती है। परन्तु परमेश्वर की आत्मा पवित्रीकरण की एक ऐसी लालसा को लाता है जो कि हमारे सारे विचारों को परमेश्वर के मन के अनुरूप कर देता है, और यह इच्छा हमें उसकी उपस्थिति में प्रवेश करने के लिए तैयार करती है जब हम पवित्रशास्त्र की व्याख्या करते हैं।

दूसरा, हम इसलिए भी परमेश्वर के निकट आते हैं जब हम पवित्रशास्त्र का अध्ययन व्यवहारिक तैयारी के द्वारा करते हैं। पवित्रशास्त्र में, ऐसे कार्य करना जो कि परमेश्वर की इच्छा के विरूद्ध है परमेश्वर की कृपामयी उपस्थिति का अनुभव करने में सबसे बड़ी रूकावट है। भक्ति आधारित व्याख्याशास्त्र की तैयारी के लिए हमारी असफलताओं के लिए पश्चाताप और ऐसी गंभीर इच्छा जिससे कि परमेश्वर प्रसन्न हो सम्मिलित है।

तीसरा, हमें परमेश्वर की निकटता को पाने के लिए भावनात्मक तैयारी के द्वारा तैयार होने की आवश्यकता है। भावनात्मक तैयारी में हमारे सभी व्यवहार सम्मिलित होते हैं – परमेश्वर के बारे में हमारी कम होती लालसा से लेकर उसके लिए स्थाई भावना का होना, मानवीय प्राणी और बाकी की सृष्टि का होना। पवित्रशास्त्र निरन्तर हमें घमण्ड, घृणा और हृदय की कठोरता के विरूद्ध चेतावनी देता है। ये और इनके जैसे ही और भावनाएँ परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश होने के लिए रूकावट बन जाती है। परन्तु विनम्रता, प्रेम, हृदय की दया और इसी तरह की अन्य बातें परमेश्वर के साथ सम्प्रेषण के मार्ग को खोल देती हैं। इसी कारण से, भक्ति आधारित व्याख्याशास्त्र में तैयारी न केवल हमारी विचाराधाराओं और व्यवहारों को, बरन् हमारी भावनाओं की पूरी मात्रा को भी सम्बोधित करती है।

बाइबल की व्याख्या बुद्धिमानी और विश्वासयोग्य तरीके से करना केवल मन का ही एक विषय नहीं है। यह हृदय का भी विषय है, एक पूरे व्यक्ति का विषय है। और इसका अर्थ यह है कि – और मुझे लगता है, मैं सोचता हूँ कि यह प्रत्येक के लिए एक चुनौती का कार्य है जिसे परमेश्वर के वचन को सिखाने या व्याख्या करने वालों के लिए दायित्व स्वरूप दिया है- इसका अर्थ है कि हमारे हृदयों की परिस्थितियाँ, मसीह के साथ हमारे सम्बन्धों, का वास्तव में बाइबल के प्रति हमारी समझ की प्रभावशीलता के ऊपर एक प्रभाव है। और इसीलिए, हमें अपने पापों को अंगीकार करने के लिए विश्वासयोग्य रहना चाहिए, प्रतिदिन सुसमाचार को पकड़े रखना चाहिए। और जब हम आत्मिक तौर पर भटकना आरम्भ करते हैं, और विशेषकर यदि हम अपने जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में भटकना आरम्भ करें, तो इसका हमारे ऊपर बहुत अधिक नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। मैं सोचता हूँ कि इसका परमेश्वर के वचन को समझने के प्रति हमारी

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

क्षमता के ऊपर भी वास्तव में नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। और एक बात जो यह विशेष तौर पर करता है वह यह है कि यह हमें वास्तव में शक्तिशाली आज्ञाओं से दूर हटा देता है जो कि हमारे पास पवित्रशास्त्र में उपलब्ध है और हम उन्हें अपनी पूरी निष्ठा के साथ पकड़े नहीं रखते हैं और क्योंकि हम उन आदेशों से हिलने डुलने की कोशिश करते हैं। यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है – हृदय की ऐसी परिस्थिति जो कि बाइबल के व्याख्या की विश्वासयोग्यता के लिए अत्यन्त आवश्यक है।

-डा. फिलिप्प रेयकेन

तैयारी की इन प्राथमिकताओं को ध्यान में रखते हुए, हमें अब व्याख्याशास्त्र की दूसरी प्रक्रिया की ओर मुड़ना चाहिए, जो कि भक्ति आधारित व्याख्याशास्त्र में जाँच-पड़ताल के मूल अर्थ से है।

जाँच-पड़ताल

पहले स्थान पर, भक्ति आधारित व्याख्याशास्त्र में वैचारिक जाँच-पड़ताल की आवश्यकता होती है – जिसमें परमेश्वर और उसके द्वारा प्रेरित लेखकों की उनके मूल श्रोताओं को इच्छित किए जाने वाली सम्प्रेषण की अवधारणा पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है। जैसा कि हमने पहले देखा है, भक्ति आधारित व्याख्याशास्त्र को पवित्रशास्त्र के साथ घनिष्ठता से सम्बद्ध होना चाहिए ताकि इसमें अटकल या त्रुटि का खतरा न हो। हमने पहले ही ध्यान दे दिया है कि विज्ञान आधारित व्याख्याशास्त्र इस कार्य के लिए सही तरह से रूपरेखित किया हुआ है। परन्तु भक्ति आधारित व्याख्याशास्त्र में हम कुछ निश्चित वैचारिक प्रश्नों को पूछते हैं जो कि सामान्य तौर पर विज्ञान आधारित व्याख्याशास्त्र में सम्बोधित नहीं किए जाते हैं। कैसे यह मूलपाठ परमेश्वर के प्रति लेखक के अनुभव को प्रगट करता है? कैसे यह इंगित करता है कि कैसे लेखन ने उसके श्रोताओं के लिए यह इच्छित किया है कि वे परमेश्वर की निकटता के अनुभव को प्राप्त करें?

दूसरे स्थान पर, भक्ति आधारित जाँच-पड़ताल को पवित्रशास्त्र के मूल अर्थ के व्यावहारिक आयामों के ऊपर भी केन्द्रित होना चाहिए। हमने पहले ही कहा है कि मानवीय व्यवहार हमें परमेश्वर की विशेष उपस्थिति में आने की हमारी क्षमता को या तो आगे की ओर बढ़ाता है या फिर इसमें रूकावट उत्पन्न करता है। इसी कारण से, जैसा कि बाइबल के लेखकों ने लिखा उन्होंने यह भी प्रगट किया कि कैसे उनके कार्य और उनके श्रोताओं के कार्य परमेश्वर की निकटता में आने के उनके अनुभव को प्रभावित करते हैं।

तीसरे स्थान पर, भक्ति आधारित जाँच-पड़ताल को मूल अर्थ के भावनात्मक आयामों को बाहर निकाल देना चाहिए जब वे परमेश्वर की निकटता के साथ सम्बन्ध बनाते हैं। यद्यपि विज्ञान आधारित व्याख्या अक्सर इसे अनदेखा कर देती है, बाइबल के लेखक अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हैं और मूल श्रोताओं की भावनाओं को प्रभावित करने की कोशिश करते हैं। बाइबल के लेखकों की प्रसन्नता, संदेह, दुख और डर की आशंका और उनके श्रोता हर मोड़ पर दिखाई देते हैं। और जैसा कि हमने पहले ही सुझाव दिया है कि परमेश्वर के साथ निकटता के गहन अनुभव में भावनाओं का बढ़ना सम्मिलित है। इसलिए, हमें सदैव इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि बाइबल का मूलपाठ लेखक और उनके श्रोताओं की भावनाओं के बारे में क्या प्रगट कर रहा है और उनके श्रोता कैसे स्वयं को परमेश्वर के साथ अपने अनुभव को उसकी उपस्थिति से सम्बन्धित करते हैं।

तैयारी और जाँच-पड़ताल की प्राथमिकताओं को स्पर्श कर लेने के बाद, हमें अब भक्ति आधारित व्याख्याशास्त्र के जीवन में उपयोग की प्राथमिकता का उल्लेख करना चाहिए।

उपयोग

जब हम पवित्रशास्त्र को परमेश्वर की उपस्थिति में पढ़ते हैं, तब हम विशेष तौर पर जैसे परमेश्वर ने इच्छित किया है वैसे ही परमेश्वर के वचन को अपने जीवन में लागू करने के लिए समर्पित होते हैं। हम बाइबल के साथ ऐसा व्यवहार नहीं करते हैं कि मानो यह कोई एक जीवनरहित वस्तु हो जिसे हजारों साल पहले मात्र नश्वर प्राणियों ने लिखा है। इसके विपरीत, हम बाइबल के साथ ऐसे व्यवहार करते हैं कि मानो यह आज भी हमारे लिए परमेश्वर का जीवित वचन है। ऐसा करने के लिए हम क्या करते हैं, के लिए उत्तम समझ को प्राप्त करने के लिए, हम एक बार फिर से वैचारिक, व्यावहारिक और भावनात्मक उपयोग के आयामों के बारे में बात करेंगे।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

वैचारिक स्तर पर, भक्ति आधारित उपयोग इस बात पर ध्यान केन्द्रित करता है कि कैसे परमेश्वर स्वयं के प्रति हमारी अवधारणाओं को, और पवित्रशास्त्र के द्वारा बाकी की सृष्टि और मानवता के प्रति प्रभावित कर रहा है। जब हम परमेश्वर की आत्मा के द्वारा तीव्र प्रार्थना और उसके वचन के चिन्तन के प्रकाश की खोज करते हैं, तो हम पाते हैं कि परमेश्वर का आत्मा पुष्टि करता, उन्नत करता और उसके प्रति, मानवता और बाकी की सृष्टि के प्रति हमारी अवधारणाओं को सही करता है। और जब हम इन सुधारों को अपने पूरे हृदय से स्वीकार करते हैं तो हम स्वयं को परमेश्वर की उपस्थिति की आशीष में और ज्यादा आगे निकटता में पाते हैं।

व्यवहारिक स्तर पर, भक्ति आधारित उपयोग इस बात पर ध्यान केन्द्रित करता है कि कैसे हमारा व्यवहार परमेश्वर की उपस्थिति के द्वारा प्रभावित होता है जब हम पवित्रशास्त्र का चिन्तन करते हैं।

जब हम पवित्रशास्त्र के पास आते हैं, तो हमें विनम्रतापूर्वक जो कुछ हमने किया है वह सब कुछ उसके आगे नंगा करके रख देना चाहिए। और जब हम प्रार्थनापूर्वक परमेश्वर की निकटता में आते हैं, तो उसका आत्मा हमारे कार्य की पुष्टि करता और उसे परमेश्वर की सेवा के लिए और भविष्य की ओर उन्नत करता है। और इससे भी आगे, जब हम आत्मा पर जागरूक निर्भरता के साथ पवित्रशास्त्र पर चिन्तन करते हैं, तो हम पाते हैं, कि वह हमें सुधारता है और हमें उन कार्यों को करने के लिए सशक्त करता है जो कि परमेश्वर को प्रसन्न करते हैं।

अन्त में, भावनात्मक स्तर पर, पवित्रशास्त्र के भक्ति आधारित उपयोग में यह सम्मिलित है कि कैसे हमारे व्यवहार और भावनायें परमेश्वर की विशेष उपस्थिति में पवित्रशास्त्र को पढ़ने के द्वारा प्रभावित होते हैं। अपने ज्ञान में, परमेश्वर का आत्मा हममें दुख को, शोक और उदासी को जब उनकी आवश्यकता होती है तो लाता है। परमेश्वर का आत्मा हमारे हृदयों को आनन्द, शान्ति और प्रेम से भर देता है। जब हम पवित्रशास्त्र के पास ऐसे जाते हैं जैसे कि यह परमेश्वर का वचन है, हमारी इसकी प्रति भावनायें होती हैं, तो अन्य लोग और बाकी की सृष्टि हमारे ऊपर चुपचाप आ पड़ती है। या, जैसा आत्मा चाहता है, वह भी हमारे हृदयों को भर सकता है ताकि हम परमेश्वर की उपस्थिति से अभिभूत हो जाए। चाहे कुछ भी क्यों न हो, जैसा कि हमने सीखा है कि कैसे पवित्रशास्त्र की व्याख्या परमेश्वर कि निकटता के प्रकाश में करनी चाहिए, हम यह पाते हैं कि पवित्रशास्त्र जीवन्त हो जाता है और, न केवल हमारी अवधारणाओं और व्यवहार को, वरन् इसी के साथ हमारी भावनाओं की गहराई को भी परिवर्तित कर देता है।

हमें यह स्वीकार करना होगा कि जब हम बाइबल का अध्ययन करते हैं तो बाइबल हमसे हमारी सोच के केवल सामान्य परिवर्तन के बारे में नहीं कह रही है। यह हमारे जीवनों के परिवर्तन के बारे में कह रही है। और इसलिए एक बात जो मैं बाइबल के अध्ययन के बारे में लोगों को उत्साहित करने के लिए यहाँ प्रयोग करना चाहता हूँ वह यह है कि वे पवित्रशास्त्र के उपयोग को तीन हिस्से में सोचें: सोचना, महसूस करना और कार्य करना। बौद्धिकवाद तब आता है जब हम केवल बाइबल को इनमें से एक ही स्थान पर लागू करते हैं – अर्थात् हम कैसा सोचते हैं पर। परन्तु परमेश्वर नहीं चाहता कि हम उससे मात्र अपने दिमाग से ही प्रेम करें, इसलिए सोचना परमेश्वर के लिए महत्वपूर्ण है। परन्तु साथ ही कि कैसे हम महसूस करते हैं यह भी परमेश्वर के लिए महत्वपूर्ण है – हमारा भावनात्मक जीवन, हमारा पूरे दिन के जीवन में हमारा स्वभाव। यह परमेश्वर के लिए महत्वपूर्ण है कि हमारी भावनाएँ क्या हैं। और भावनाएँ परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य भी हो सकती हैं और भावनाएँ परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य *नहीं* भी हो सकती हैं। यहाँ पर तटस्थ भावनाओं के रूप जैसी कोई भी बात नहीं है। परन्तु यहाँ पर कार्य "करने" का भी आयाम है। जब हम पवित्रशास्त्र को अपने जीवन में लागू करते हैं, तो परमेश्वर हमसे केवल यही नहीं चाहता है कि हम यह सोचें कि यह कैसे हमारे भावनाओं को प्रभावित करता है या फिर हमारे दिमाग को प्रभावित करता है, परन्तु इसी के साथ यह कैसे हमारे कार्य को प्रभावित करता है। इसलिए यदि हम इस जाली को प्रयोग करे – सोचें, महसूस करें, कार्य करें – तो यह वास्तव में बाइबल के प्रति हम कैसा सोचते है, के लिए एक सन्तुलन का प्रबन्ध करेगा।

-माइकल जे क्रूगर

सारांश

बाइबल आधारित व्याख्याशास्त्र के इस परिचय में, हमने अपने ध्यान को तीन मुख्य अवधारणाओं पर केन्द्रित किया। सबसे पहले, हमने कुछ मूल शब्दावली का पता लगाया जिनके द्वारा हमने हमारे इस विषय की आवश्यकता के लिए स्वयं को इसके अनुकूल बनाया। दूसरा, हमने देखा कि विज्ञान आधारित व्याख्याशास्त्र उसकी कठोरता और तार्किक स्थिरता के लिए महत्वपूर्ण है। और तीसरा, हमने देखा कि भक्ति आधारित व्याख्याशास्त्र – परमेश्वर की उपस्थिति में पवित्रशास्त्र का अध्ययन करना – विज्ञान आधारित व्याख्याशास्त्र के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रतिभार है।

पवित्रशास्त्र की व्याख्या के बारे में और ज्यादा सीखने से परमेश्वर की सभी तरह की आशीषों और नए आत्मबोध के मार्ग प्रशस्त हुए हैं। पुराने और नए नियम में प्रत्येक जो विश्वास करता है, जो कुछ हम करते हैं और परमेश्वर के विश्वासयोग्य लोग होने के नाते प्रत्येक वह बात जिसे हम अनुभव करते हैं, के लिए मानकों को निर्धारित किया है। और जब हम आने वाले अध्यायों में और ज्यादा विवरण के साथ देखेंगे, तो हम यह देख पाएंगे कि यह कितना आवश्यक है कि हमें स्वयं को दोनों अर्थात् विज्ञान और भक्ति आधारित व्याख्याशास्त्र के लिए समर्पित कर देना चाहिए। जब हम ऐसा करते हैं, तब हम परमेश्वर की विश्वासयोग्य सेवकाई के लिए हमारे जीवनों के प्रत्येक आयामों में नए मार्गों की खोज करेंगे।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम